सामान्य एवं अनुसूचित वर्ग के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर उनके सामाजिक समायोजन के प्रभाव का अध्ययन

विनोद कुमार भार्गव
पी-एच.डी.(शिक्षा),शोधार्थी
डॉ. बी.आर.अम्बेडकर सामा. वि.वि.,महू
इंदौर,(मध्यप्रदेश)

प्रस्तावना – हम जानते हैं कि किसी भी राष्ट्र का विकास शिक्षा के बिना संभव नहीं है। हमारे लोकनायकों ने शिक्षा की महत्ता को जाना तथा देश मैं विभिन्न प्रकार की शिक्षा के लिए, अनेक तरह के शिक्षण संस्थान, विश्वविद्यालय तथा शोध केन्द्रों को स्थापित किया। हमारे राष्ट्र नायकों ने अपनी दूर दृष्टि से यह भी देखा कि शिक्षा केवल सीमित तबके तक सीमित न होवे बल्कि वह सभी वर्गों के लिए हो;निष्पक्ष हो; भेद भाव रहित हो; सभी वर्गो के लिए 6 से 14 वर्ष तक समान; निशुल्क व अनिवार्य शिक्षा हो, इसे कानूनी रूप से भी अनिवार्य किया गया;वहीं भारतीय शिक्षा व्यवस्था में संवैधानिक रूप से यह व्यवस्था भी बनाई गई कि वह वर्ग जिसे निम्न वर्ग अथवा अनुसूचित वर्ग कहा जाता है,वह भी उच्च वर्ग/सामान्य वर्ग के बराबरी पर खड़ा हो सके, उसके लिए अनुसूचित वर्गों को शिक्षा समेत विभिन्न क्षेत्रों में आरक्षण की व्यवस्था संवैधानिक रूप से प्रदान की गई ,शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु इन 74 वर्षों में विभिन्न शिक्षा आयोग आए जिन्होंने अपने अमूल्य सुझाव शिक्षा में सुधार हेतु दिए, भारत सरकार ने उन पर अमल भी किया, किंतु इतने वर्षों के बाद भी, आए दिन समाचारों पत्रों व टी.व्ही. चैनल्स को शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रश्न चिन्ह लगाते हुए देखा गया है, जो कि किसी भी राष्ट्र की तरक्की के लिए उचित नहीं है, क्योंकि राष्ट्र का भविष्य उस देश के बच्चे हैं, बच्चों से ही राष्ट्र का भविष्य है, अतः शिक्षा से बच्चों का और बच्चों से राष्ट्र का भविष्य तय होता है, अतः बच्चों में; राष्ट्र के भविष्य को ध्यान में रख कर अनुसूचित वर्ग व सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर सामाजिक समायोजन के प्रभाव का अध्ययन करना आज की आवश्यकता है।

अध्ययन की प्रासंगिकता-

छात्रों को अपने ज्ञान को निरंतर बढ़ाने के लिए सतत अध्ययन के साथ ही जरूरी है कि उनका सामाजिक समायोजन बेहतर हो; क्योंकि सामाजिक समायोजन छात्रों को न सिर्फ विद्यार्जन में सहायक होगा बल्कि वह विपरीत परिस्थितियों में राष्ट्रीय विकास में भी सहयोगी होगा, अतः छात्रों के सामाजिक समायोजन का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना आज सामयिक है|

अध्ययन की आवश्यकता और महत्व-

शिक्षा से ही व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है, अतः राष्ट्र का विकास शिक्षा पर अवलंबित है तथा व्यक्ति एक इकाई है,जो जीवन में उन्नति के लिए, तनाव से मुक्ति के लिए विपरीत परिस्थितियों में अपने आपको समायोजित करता है, इसे ही सामाजिक समायोजन कहते है,

जिसका कि अत्यधिक महत्व है, विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन अच्छा होगा तो शैक्षणिक उपलब्धि भी उच्च होगी,यदि सामाजिक समायोजन मध्यम या निम्न प्रकार का होगा तब शैक्षणिक उपलब्धि भी तदनुसार होगी ,अतः राष्ट्र के विकास के लिए ही आज इसके अध्ययन की आवश्यकता और महत्व है| शोधार्थी ने इस हेतु पूर्व शोध कार्यों का अध्ययन किया और देखा अपने आपको समायोजित करता है इसे ही सामाजिक समायोजन कहते है, जिसका अत्यधिक महत्व् है| विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन अच्छा होगा तो शैक्षणिक उपलब्धि भी उच्च होगी,यदि सामाजिक समायोजन मध्यम या निम्न प्रकार का होगा तब शैक्षणिक उपलब्धि भी तदनुसार होगी ,अतः राष्ट्र के विकास के लिए ही आज इसके अध्ययन की आवश्यकता और महत्व है, शोधार्थी ने इस हेतु पूर्व शोध कार्यों का अध्ययन किया और देखा कि- डी.रोजियर मेलिसा ई. एवं साथी (2011) ने बच्चों के सामाजिक समायोजन का उनकी शैक्षणिक निष्पादन पर प्रभाव का अध्ययन किया, अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शैक्षणिक निष्पादन पर सामाजिक समायोजन का प्रभाव पड़ता है | इसी प्रकार सुहेला येन्जी मोल्की एवं साथी (2015) ने भी अपने अध्ययन में सामाजिक समायोजन व शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सह सम्बन्ध को पाया है| इसी तरह खराड़ी,रेखा(2017) एवं सैयद मो. ताहिर शाह एवं साथी(2019) ने भी अपने-अपने अध्ययन में,समायोजन का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव को पाया है|

उद्देश्य –

सामान्य एवं अनुसूचित वर्ग के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर उनके सामाजिक समायोजन के प्रभाव का अध्ययन |

परिकल्पना –

सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के छात्रों के सामाजिक समायोजन का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं होता है ।

स्वतंत्र चर-

- सामान्य एवं अनुसूचित वर्ग
- सामाजिक समायोजन

परतंत्र चर-

- शैक्षणिक उपलब्धि

नियंत्रित चर-

- कक्षा- दसवीं
- उम्र 14 से 18 वर्ष

न्यादर्श –

माध्यमिक स्तर के कक्षा ग्यारहवीं में अध्ययनरत मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के, यादृच्छिक रूप से चयनित विकास खंडों से छात्रों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है-

वर्ग	छात्र
सामान्य वर्ग	100
अनुसूचित वर्ग	100
योग	200

उपरोक्त छात्रों पर डॉ. रोमा पाल की सामाजिक समायोजन सूची का प्रशासन किया गया है।

विधि-

प्राथमिक न्यादर्श में चयनित छात्रों पर डॉ. रोमा पाल द्वारा निर्मित सामाजिक समायोजन सूची का प्रशासन किया गया एवं फलांकन के उपरांत दोनों वर्गों के, औसत सामाजिक समायोजन के छात्रों को छोड़ कर, उच्च एवं निम्न सामाजिक समायोजन के छात्रों का चयन किया गया, छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के लिए माध्यमिक शिक्षा मंडल की, कक्षा दसवीं के कुल प्राप्तांको को लिया गया है |

सांख्यिकीय गणना-

शोध में सांख्यिकीय गणना करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं प्रसरण विश्लेषण का उपयोग किया गया है |

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या –

परिणामों के विश्लेषण एवं व्याख्या को निम्नांकित सारणी में प्रस्तुत किया गया है-

तालिका क्रमांक - 1

बालक शैक्षणिक उपलब्धि

सामाजिक समायोजन	जाति वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
उच्च	अनुसूचित वर्ग सामान्य वर्ग	34 28	326.53 341.54	65.56 82.29
निम्न	अनुसूचित वर्ग सामान्य वर्ग	27 49	350.74 356.22	75.77 85.89

अनोवा सारांश तालिका - 2

विचरण के स्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	वर्गों का मध्यमान	**F** –अनुपात	**P** मान
समूहों के बीच	3 138	18995.95 827995.15	6331.98 6179.07	1.02	>0.05

समूहों के अंदर					

स्वतंत्रता के अंश- **3,138** **0.05** स्तर पर निम्नतम मान –**2.68**

0.01 स्तर पर निम्नतम मान-3.94

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित वर्ग एवं सामान्य वर्ग के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर सामाजिक समायोजन का प्रभाव नहीं पड़ता है, क्योंकि प्राप्त एफ -अनुपात का मान 1 .02 आया है, जो सार्थकता के लिए न्यूनतम मान की अपेक्षा कम है | अतः उपरोक्त मान के आधार पर पूर्व में ली गई परिकल्पना मान्य होती है | उपरोक्त परिणाम यह प्रदर्शित कर रहे हैं कि शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक समायोजन से प्रभावित नहीं होती है, चाहे विद्यार्थी सामान्य वर्ग के हो अथवा अनुसूचित वर्ग के, वर्तमान समय में शिक्षा के महत्व को, चाहे वह व्यक्ति किसी भी वर्ग का हो अच्छी तरह समझते हैं, समस्त अभिभावक अपने बच्चों को अधिकतम संभावित सुविधाएं प्रदान करने का हर संभव प्रयास करते हैं ,जिससे बच्चों की उपलब्धि प्रभावित न हो, अनुसूचित वर्ग के अभिभावक कुछ कम सामाजिक आर्थिक स्तर के हो सकते हैं परंतु शासन उन्हें विभिन्न प्रावधानों के अंतर्गत अध्ययन हेतु सुविधाएं प्रदान कर रहा है, जिससे वे छात्र उपलब्धि अर्जित कर अंततः एक अच्छा व्यवसाय प्राप्त कर, जो उनकी योग्यताओं के अनुरूप हो, अच्छा जीवन यापन कर, समाज की मुख्यधारा में जो उसके वर्तमान समय में, शिक्षित बेरोजगारी के कारण आज गला काट स्पर्धा हो गई है, जिसको सभी अभिभावक भी भली-भांति जानते व समझते हैं | अतः अनुसूचित वर्ग व सामान्य वर्ग दोनों के अभिभावक यथा संभव प्रोत्साहन, प्रेरणा तथा अच्छे सामाजिक समायोजन को उपलब्ध कराने का प्रयास करते हैं जिससे छात्रों को समायोजन को लेकर किसी प्रकार का तनाव न हो, न ही उन्हें किसी भी प्रकार की शैक्षिक चिंता हो, सामान्य वर्ग की तरह ही अनुसूचित वर्ग के अभिभावक भी अपने बच्चों को यथा संभव वह सब उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास करते हैं, जिससे बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि किसी भी प्रकार से प्रभावित न होवे, उच्च एवं निम्न सामाजिक समायोजन में अंतर होते हुए भी, छात्रों को मिलने वाली प्रेरणा, अभिभावक प्रोत्साहन तथा साथियों के साथ स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना, उन्हें सभी संभाव्य उपलब्धि के लिए प्रेरित करते रहती है, संभवतः इन्हीं कारणों से सामाजिक समायोजन एवं वर्गों का छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है |

शोध निष्कर्ष-

शोध से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर उच्च एवं निम्न सामाजिक समायोजन के अनुसूचित वर्ग एवं सामान्य वर्ग के कुल 4 समूह के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में, अनोवा टेबल के विश्लेषण से स्पष्ट है कि— (3, 138) स्वतंत्रता के अंशों के लिए एफ- अनुपात का मान 1.02 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 विश्वास के स्तर के मान 2.68 से कम है, अतः स्पष्ट है कि सामाजिक समायोजन के उच्च समूह के अनुसूचित वर्ग, सामान्य वर्ग तथा निम्न सामाजिक समायोजन के अनुसूचित वर्ग, सामान्यवर्ग के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है, अर्थात सभी समूहों की उपलब्धि कमोबेशी समान है। अतः

सामान्य एवं अनुसूचित वर्ग के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर सामाजिक समायोजन का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

- कपिल, एचके (2009): *अनुसंधान विधियां,* चौदहवां संस्करण, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा, पी.पी.-147-160,397-401
- राय, पारसनाथ (2018):*अनुसंधान परिचय,* द्वादशम संस्करण, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, संजय प्लेस आगरा, पी.पी.- 62-81,233-311
- श्रीवास्तव,डी.एन.(2009): *सांख्यिकी एवं मापन,* द्वितीय संस्करण, अग्रवाल पब्लिकेशन्स , आगरा-2, पी.पी.-62-114,243-267
- सिंह,अरुण कुमार (2015): *मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां,*बारहवाँ परिवर्धित एवं संसोधित संस्करण, मोतीलाल बनारसीदास चौक वाराणसी, पी.पी.-
- सिंह, रामपाल एवं शर्मा ओपी (2012): *शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी ,* चतुर्थ संस्करण, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा-2, पी.पी.-92-145,217-244
- विद्याभूषण एवं सचदेव डी.आर-(2004).:*समाजशास्त्र के सिद्दान्त,*चौबीसवाँ संस्करण,किताब महल,22-ए सरोजनी नायडू मार्ग ,इलाहाबाद, पी.पी.-171-176
- डी.रोजियर मेलिसा ई. एवं साथी (2011),□ *बच्चों के सामाजिक समायोजन का उनकी शैक्षिक निष्पादन पर प्रभाव का अध्ययन□,* Journal List HHS Author Manuscripts, वॉल्यूम-27, इश्यू -01, पी.पी.-25-47
- खराड़ी,रेखा(2017*),□दक्षिणी राजस्थान में जनजाति विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षणिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन□,* टी.टी.एम.ए.ट्रेक्स, वॉल्यूम-01, इश्यू-31, पी.पी.-52-57, www.ttmatracks.org
- सैयद मोहम्मद ताहिर शाह एवं साथी(2019),□*समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि एक तुलनात्मक अध्ययन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं का,*□इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ साइंटिफिक रिसर्च एण्ड रिव्यु,वॉल्यूम-7, इश्यू-6, पी.पी.-12-19
- सुहैला येन्जी मोल्की एवं साथी (2015),□ *स्व अवधारणा सामाजिक समायोजन और फारसी छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन□,* IRSSH , वॉल्यूम -8, इश्यू-2, पी.पी.-50-60,www.irssh.com